



अगस्त 2019

वर्ष : 2 अंक :11

# सिफरी मासिक समाचार

## नील क्रांति की ओर अग्रसर



### निदेशक की कलम से



'सिफरी मासिक समाचार' का अगस्त अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। संस्थान में राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस का आयोजन दिनांक 10 जुलाई 2019 को किया गया। इस समारोह में पश्चिम बंगाल, झारखंड, बिहार, ओड़ीशा और तेलंगाना के 9 प्रगतिशील मत्स्य कृषकों को राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यह दिन प्रो. हीरालाल चौधरी द्वारा अविष्कृत मछलियों में प्रेरित प्रजनन तकनीक की महान उपलब्धि के लिए मनाया जाता है और 'प्रेरित प्रजनन की तकनीक 'प्रथम नीली क्रांति' के मशाल वाहक के रूप में जानी जाती है। संस्थान ने 19 जुलाई 2019 को मत्स्य और जलीय संसाधन विभाग, नागालैंड और भाकृअनुप.- राष्ट्रीय मिथुन अनुसन्धान केंद्र, मेडज़िपेमा के सहयोग से 'नागालैंड में खुले जल मात्स्यिकी प्रबंधन पर एक संवादात्मक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य उत्तर पूर्वी क्षेत्र के लिए संस्थान द्वारा विकसित प्रबंधन दिशानिर्देशों / प्रौद्योगिकियों के बारे में योजनाकारों, मत्स्य अधिकारियों और मछुआरों को अवगत करना था। संस्थान की पंचवर्षीय समीक्षा बैठक का आयोजन 26-27 जुलाई को किया गया। डॉ. चिंदी वसुदेवाप्पा के नेतृत्व में समिति के सदस्यों ने 2012-2017 तक किये गए कार्यों की समीक्षा की। संस्थान द्वारा विकसित नई तकनीको और गतिविधियों से किसानों, अधिकारियों एवं छात्रों को अवगत कराने के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं इसके साथ साथ जन जागरूकता कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। 27 जुलाई को नवाबगंज घाट पर गंगा नदी में रचिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया और 30000 मत्स्य अंगुलिकाओं को गंगा नदी में संवर्धित किया गया। आशा है यह अंक आपको पसंद आएगा।

आप सभी को स्वन्तंत्रता दिवस की शुभकामनाएं।

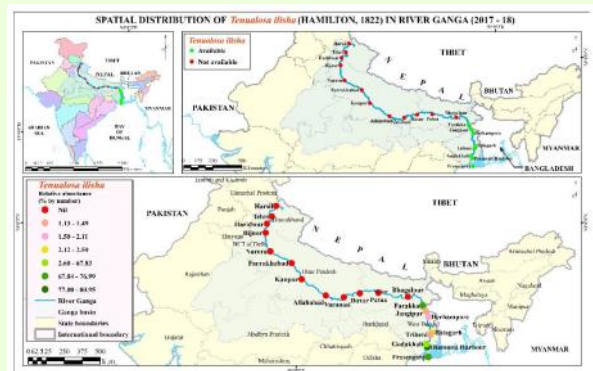


## मुख्य शोध उपलब्धियां

- संस्थान द्वारा कावेरी नदी में मानसून पूर्व सर्वेक्षण में पाया गया कि मयानुर बैराज के ऊपरी क्षेत्र में झींगा मछली प्रगहन (*मैक्रोब्रैकियम मैल्कोमेसनई*) में सुधार हुआ है और इसकी लैडिंग 150 से 200 किलोग्राम प्रति वर्ष दर्ज की गयी है। संभवतः पिछले वर्ष बाढ़ के कारण इस प्रजाति का अभिगमन इस क्षेत्र में हुआ होगा।
- संस्थान ने गंगा नदी में मॉनसून पूर्व सर्वेक्षण में पाया कि बिहार में साइनोफाईसी शैवाल (*माइक्रोसिस्टिस स्पेसिस*) का विकास कम जल प्रवाह (0.4 मीटर प्रति सेकंड) में बक्सर, पटना और भागलपुर में क्रमशः 8550 शैवाल प्रति लीटर, 2285 शैवाल प्रति लीटर और 15690 शैवाल प्रति लीटर औसतन दर्ज किया गया।
- बिहार के बक्सर और पटना में मानसून पूर्व सर्वेक्षण के दौरान गंगा नदी में विदेशी कॉमन कार्प (*साइप्रिनस कार्पियो*) की आवक में वृद्धि क्रमशः 360 किलोग्राम प्रति दिन और 1725 किलोग्राम प्रति दिन दर्ज की गयी है।
- संस्थान द्वारा विकसित बेहतर मत्स्य प्रबंधन प्रोटोकॉल के कार्यान्वयन के कारण बिहार के पूर्वी चंपारण जिले के मोतिहारी स्थित कररिया मन (100 हेक्टेयर क्षेत्र) मछली की पैदावार और रोजगार सृजन में क्रमशः 2.6 गुना और 3.5 गुना की वृद्धि हुई है।
- अनुसूचित जाति के मछुआरों की आजीविका सुधार के लिए ओडिशा के फनी प्रभावित सालिया जलाशय में सिफरी पेन एचडीपीई में मत्स्य पालन का प्रदर्शन किया गया। इस जलाशय में 0.1 हेक्टेयर के दो पेन लगाए गए हैं और इनमें भारतीय मुख्य कार्प और अन्य महंगी देशी प्रजातियों के मत्स्य बीजो को संचयित किया गया जिससे यहाँ विकसित अंगुलिकाओं को जलाशयों में डाला जा सके।
- पंगेशियनोडोन हाइपोथाल्मस में पायी जाने वाली ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन के फार्माकोकाइनेटिक्स अध्ययन से पता चला है कि मछली के रक्त में लगभग 12-24

घंटे तक एंटीबायोटिक की पर्याप्त मात्रा उपस्थित रहती है। इससे अनुमोदित एंटीबायोटिक की सहायता से मछली के रोग उपचार में मदद मिल सकती है।

- गोदावरी नदी के मानसून पूर्व सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि नदी के पूरे क्षेत्र में नासिक, नासार्डी और नांदेड़ क्षेत्रों को छोड़कर जलीय जीवों के लिए अनुकूलतम पाया गया। नासिक, नासार्डी और नांदेड़ में अपरद पदार्थ बहुत अधिक पाये गए (कार्बनिक पदार्थ 4.1 प्रतिशत तक और विशिष्ट चालकता 1935 माइक्रोन सीमेंस प्रति सेंटीमीटर)।
- संस्थान के मॉनसून पूर्व सर्वेक्षण के दौरान ताप्ती नदी के निचले हिस्से पर पंगेशियनोडोन हाइपोथाल्मस नामक विदेशी प्रजाति दर्ज की गयी है। ताप्ती नदी के निचले भाग में पायी जाने वाली अलवणीय जल प्रजातियां, सिस्टोमस सराना और ज़ेनेंटोडोन कैन्सीला में आइसोपोड एक्टोपारासाइट को देखा गया।
- मॉनसून पूर्व महीनों में कृष्णागिरी जलाशय में मत्स्य विविधता का आंकलन किया गया और 9 कुल (Family) और 5 वर्ग (order) की 16 प्रजातियों को रिकॉर्ड दर्ज किया गया। शैनन विविधता सूचकांक 2.285 पाया गया। जलाशय के मध्यवर्ती भाग में मत्स्य विविधता 2.285, लॉटिक क्षेत्रों में 2.083 और लेंटिक क्षेत्र में 2.382 पायी गयी।



- गंगा नदी की 185 मछली प्रजातियों की विविधता और वितरण को दर्शाने वाले भौगोलिक सूचना प्रणाली आधारित मानचित्र नदी मास्त्यिकी के बेहतर प्रबंधन के लिए तैयार किए गए हैं।

## संस्थान में राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस का आयोजन



संस्थान ने हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 10 जुलाई 2019 को बैरकपुर स्थित अपने मुख्यालय में राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस का आयोजन किया। यह दिन प्रो. हीरालाल चौधरी द्वारा अविष्कृत प्रेरित प्रजनन तकनीक की महान उपलब्धि के लिए के लिए मनाया जाता है। प्रो. चौधरी को इस अनुसंधान के लिए देश में 'प्रेरित प्रजनन की तकनीक' का जनक माना जाता है, जिसे भारत में 'प्रथम नीली क्रांति' के मशाल वाहक के रूप में जाना जाता है। नदी में जैव विविधता को बनाए रखने और संरक्षित करने के उद्देश्य से गंगा नदी में इस अवसर पर नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत दासपारा घाट, बैरकपुर में गंगा नदी में 30000 भारतीय मुख्य कार्प अंगुलिमीनों को छोड़कर इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया।

नौ किसानों को देश के अंतर्स्थलीय मत्स्य विकास में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए संस्थान द्वारा सर्वश्रेष्ठ मत्स्य कृषक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री बंकिम हाजरा, माननीय विधायक, सागर द्वीप, डॉ. वी. वी. सुगुनान, पूर्व

सहायक उपमहानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी), भाकृअनुप., डॉ. मधुमिता मुखर्जी, सह निदेशक (तकनीकी), पश्चिम बंगाल सरकार और डॉ. बी. सी. झा, पूर्व प्रभागाध्यक्ष आरडब्ल्यूएफ डिवीजन, ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री बंकिम हाजरा ने संस्थान की गतिविधियों कि सराहना की और संस्थान द्वारा देश के दूरस्थ कोनों की सेवा के लिए की गई पहल के लिए निदेशक और संस्थान के अधिकारियों की प्रशंसा की। डॉ. वी. वी. सुगुनान ने अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र की संभावनाओं और चुनौतियों और संस्थान द्वारा खाद्य और पोषण सुरक्षा प्राप्त करने में निभाई गई भूमिका पर जोर दिया। डॉ. मधुमिता मुखर्जी ने भविष्य



में मत्स्य जैव विविधता और प्रजातियों के विविधीकरण के संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, झारखंड के 150 से अधिक किसानों ने भाग लिया। इस समारोह के बाद मछुआरों और वैज्ञानिकों के बीच विचार विमर्श सत्र आयोजित किया गया, जिसमें विशेषज्ञों ने अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्रों की संभावनाओं और समस्याओं पर चर्चा की और वर्तमान संदर्भ में इन चुनौतियों को कम करने का तरीका बताया। इस कार्यक्रम में कुल आठ



मत्स्य पालको को सम्मानित किया गया। बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल, के दो-दो मत्स्यपालक एवं ओडिशा और तेलंगाना से एक-एक मत्स्यपालक। बिहार, नालंदा के श्री शिवनन्दन प्रसाद ने अपना कार्य जयन्ती रोहू और अमुर कार्प के प्रजनन और संचयन के साथ शुरू किया था, वर्तमान में उनके पास 34 एकड़ में फैला हुआ जल क्षेत्र है (10

नर्सरी तथा 1 हैचरी) है। श्री प्रसाद वर्तमान में 60 टन मछली तथा 6 करोड़ स्पॉन से कुल 76.75 लाख रुपये का वार्षिक लाभ ले रहे हैं। बिहार के अन्य सदस्य मॉ० शाहबुद्दीन, गाँव चाकंद, गया, के रहने वाले है मॉ० शाहबुद्दीन ने केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षण संस्थान, काकीनाडा से मत्स्य पालन में प्रशिक्षण प्राप्त किया और वर्तमान में 8.58 एकड़ के दो तालाबों से साल में दो फसल लेकर 4 लाख रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त



कर रहे हैं। पश्चिम बंगाल मेदिनीपुर के श्री रंजीत भौमिक अपने राज्य के वनामी के अग्रणी उत्पादक है इसके साथ साथ मिल्कफिश एवं गिफ्ट थिलेपिया का भी पालन करते है। इसी राज्य के मुर्शिदाबाद जिले के श्री प्रबीर मण्डल पिछले 25 वर्षों से मत्स्य बीज का उत्पादन कर रहे है जीरा से फ्राई, और फ्राई से अनुलिका बना कर व्यापार कर रहे है। श्री मण्डल इस राज्य के होनहार मछली ब्रीडर है जो भारतीय प्रमुख कार्प के अलावा पाबदा (ओ.बिमाकुलाटस), मांगुर (सी. बैटराकूस), सिंधी, कोइ, टेंगरा, फेदर बेक ब्लैक कार्प सर पुंटी और अन्य रंगीन मछलियों के प्रजनन में लगे हुए है और लाभ प्राप्त करते

है। वह उपरोक्त सभी मछलियों के ब्रूडर अपने फार्म में ही पालते है। श्री सोमनाथ हलदार ग्राम तारानगर जिला पाकुड़ झारखण्ड ने वर्तमान से 30 वर्ष पूर्व एक एकड़ के तालाब तथा पांच हजार रुपये से मत्स्य उत्पादन शुरू किया था। अपनी मेहनत से वर्तमान में 100 एकड़ जल क्षेत्र में मत्स्य पालन तथा मत्स्य बीज उत्पादन कर रहे है। वर्तमान में उन्हें मात्स्यिकी से कुल 25 लाख का मुनाफा होता है। झारखंड के दूसरे सम्मानित सदस्य श्री राघवेन्द्र प्रसाद बेहरा (रसायन विज्ञान में स्नातक) ने 2012 में राजकीय मत्स्य विभाग के एक स्लोगन “मछली पालन करें, घर में एटीएम लाएं” से प्रभावित होकर मत्स्य पालन के पुश्तैनी कार्य में





## नागालैंड में “खुले जल मात्स्यिकी प्रबंधन” पर परस्पर संवादात्मक कार्यशाला का आयोजन



भाकृअनुप - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा 19 जुलाई, 2019 को मत्स्य और जलीय संसाधन विभाग, नागालैंड सरकार, कोहिमा, और भाकृअनुप -राष्ट्रीय मिथुन अनुसन्धान केंद्र, मेडज़िपेमा के सहयोग से 'नागालैंड में खुले जल मात्स्यिकी प्रबंधन पर एक परस्पर संवादात्मक कार्यशाला का आयोजन किया गया। मत्स्य अधिकारी, मछुआरो, मछली किसान, एंग्लर एसोसिएशन, नागालैंड के प्रतिनिधि, भाकृअनुप -केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और भाकृअनुप - राष्ट्रिय मिथुन अनुसन्धान केंद्र के वैज्ञानिकों / तकनीकी अधिकारियों सहित कुल 60 प्रतिभागियों ने एकदिवसीय कार्यशाला में भाग लिया। गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए, संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख डॉ. बी.के. भट्टाचार्य ने कार्यशाला की पृष्ठभूमि और उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने संस्थान के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र और राज्य में खुले जल



मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए अनुसंधान सहायता प्रदान करने के लिए नागालैंड मात्स्यिकी विभाग के बीच लंबे सहयोग को के बारे में बताया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य उत्तर पूर्वी क्षेत्र के लिए संस्थान द्वारा विकसित प्रबंधन दिशानिर्देशों / प्रौद्योगिकियों के बारे में योजनाकारों, मत्स्य अधिकारियों और मछुआरों को शिक्षित करना था। श्री आर. ओं, सहायक, निदेशक, मत्स्य और जलीय संसाधन विभाग, नागालैंड सरकार ने बताया कि डॉयंग जलाशय सहित समृद्ध जलीय संसाधन होने के बावजूद नागालैंड ने खुले पानी के मत्स्य विकास में पर्याप्त प्रगति नहीं की है। भाकृअनुप - राष्ट्रिय मिथुन अनुसन्धान केंद्र के निदेशक डॉ. अभिजीत मित्रा ने कहा कि मत्स्य विकास, और पशुपालन का पूर्ण मंत्रालय के गठन के बाद निकट भविष्य में मत्स्य विकास की अत्यधिक संभावनाये है। उन्होंने बताया कि मिथुन उत्पादक वाले कई क्षेत्रों में खुले जल संसाधन हैं जहां



जा सकती है। आयुक्त और सचिव ने बताया कि नागालैंड में मछली की कुल आवश्यकता 22,000 टन है और वर्तमान उत्पादन 9035 टन है जिसके परिणामस्वरूप मांग और आपूर्ति के बीच 60% का अंतर होता है। इस प्रकार, राज्य के सभी उपलब्ध मत्स्य संसाधनों से मछली उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता है। इससे राज्य के लिए अतिरिक्त आय और रोजगार भी पैदा होगा।

अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास, ने बताया कि संस्थान ने पूर्वोत्तर राज्यों त्रिपुरा, असम और मणिपुर में खुले जल मात्स्यिकी प्रबंधन पर 3 कार्यशालाएं आयोजित की हैं। वर्तमान कार्यशाला श्रृंखला में चौथी है। उन्होंने कहा कि तालाब से खुले जल में मात्स्यिकी पालन अलग हैं और उनसे मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए विभिन्न तकनीकों और प्रबंधन दिशानिर्देशों की आवश्यकता है। संस्थान ने खुले जल के मत्स्य पालन में स्टॉक करने के लिए बीज के स्वस्थानी उत्पादन के लिए पेन और केज पालन का विकास किया है। बाढ़कृत आद्रभूमि में संस्थान के हस्तक्षेप से असम की मत्स्य उत्पादकता में दो गुना वृद्धि हुई और बिहार में तीन गुना वृद्धि हुई। पेन और केज पालन का उपयोग मछलियों के उच्च उत्पादन के लिए किया जाता है। संस्थान ने देश के विभिन्न खुले जल क्षेत्र जैसे बाढ़कृत आद्रभूमि और जलाशयों के लिए अलग-अलग प्रबंधन दिशानिर्देश तैयार किए। यद्यपि, राज्य के मत्स्य अधिकारियों को बेहतर परिणाम के लिए मत्स्य



सहकारी समितियों के साथ प्रभावी समन्वयन करने की आवश्यकता है। उन्होंने मछली उत्पादन के लिए सभी जल निकायों जैसे झीलों / आद्रभूमि और राज्य के जल संचयन संरचनाओं का उपयोग करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने सभी को सूचित किया कि संस्थान ने जलवायु से प्रभावित मछलियों की प्रजातियों की पहचान की है जैसे कि मीनोज, कैट फिश, स्लेक हेड आदि। सत्र का समापन क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के वैज्ञानिक डॉ. पी. दास द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस कार्यशाला को नागालैंड के समाचार पत्रों में तथा ऑन लाइन पोस्ट में व्यापक जगह मिली।

## Open water fisheries mgmt. workshop held at Medziphema

**Dimapur, July 19 (EMN):** An interactive workshop on 'Open water fisheries management in Nagaland' organised by ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute, Barrackpore Kolkata in collaboration with the department of Fisheries and Aquatic Resources, Government of Nagaland, Kohima and ICAR-NRC on Mithun, Medziphema was conducted on July 19.

A press release issued by DIPR informed that the workshop was held in the Conference Hall of ICAR-NRC on Mithun, Medziphema.

Additional Director, department of Fisheries & Aquatic Resources, Rongsennungba in his opening remark gave a brief account and status of open water fisheries in Nagaland, while director ICAR-CIFRI Barrackpore, Dr. BK Das explained on the role of ICAR-CIFRI in development of open water fisheries resources of India. Dr. BK Bhattacharya, HRCICAR-CIFRI, Regional Centre Guwahati also SPOKE on the strategies for scientific fishery management of open water fisheries resources of Nagaland.

Commissioner and Secretary department of Fisheries & Aquatic Resources, Senti Ao, IAS, who was the special invitee of the workshop, thanked the ICAR Barrackpore for organising such an important seminar that could enrich the people of Nagaland. He urged all the district fisheries officers to utilise such workshops to extract knowledge in fishery development in the state.

As also emphasised on the importance of rich natural resources which could provide immense potential for aqua culture development and produce, and generate employment and double the income of the people.

Dignitaries from different organisations, scientists, DFOs, progressive farmers and anglers participated in the workshop. A documentary was also released during the workshop, informed DIPR.

### Workshop on 'open water fisheries management'



**Commissioner and secretary Fisheries & Aquatic Resources, Senti Ao, speaking at the Interactive Workshop on July 19. (DIPR)**

**DIMAPUR:** An interactive workshop on "Open water fisheries management in Nagaland" was held at the conference hall of ICAR-NRC on Mithun, Medziphema on July 19. According to DIPR, the workshop was organised by ICAR-Central

department of Fisheries & Aquatic Resources, Rongsennungba in his opening remark gave a brief account and status of open water fisheries in Nagaland.

Director ICAR-CIFRI Barrackpore, Dr. B.K. Das explained the role of

ICAR-CIFRI in development of open water fisheries resources of India.

Dr. B.K. Bhattacharya, HRCICAR-CIFRI, Regional Centre Guwahati also spoke on the strategies for scientific fishery management of open water fisheries resources of Nagaland.

Commissioner and secretary department of Fisheries & Aquatic Resources, Senti Ao as a special invitee, in his short speech thanked the ICAR Barrackpore for their initiative in organising the workshop.

He urged all the district Fisheries Officers to utilise such workshops to extract knowledge in fishery development in the state.

He also emphasized the importance of rich natural resources which

could provide immense potential for aqua culture development and produce and generate employment and double the income of the people.

Dignitaries from different organisations, scientists, DFOs, progressive farmers, anglers, participated in the workshop. A documentary was also released during the workshop.

The programme was chaired by Dr. Abhijit Mitra and vote of thanks by Simanku Borah, Scientist ICAR-CIFRI Regional Centre, Guwahati which was followed by interactive session.

Earlier, the programme started with lighting of lamp by Commissioner and Secretary department of Fisheries & Aquatic Resources, Senti Ao.

## संस्थान में स्मार्ट दरवाजो की स्थापना



संस्थान के प्रमुख प्रयोगशालाओं, जिनमें जटिल तथा परिष्कृत उपकरण लगे हुये और कई परियोजनों के वैज्ञानिक कार्य कर रहे है को सुरक्षित तथा सुचारु रूप से कार्य प्रबंधन हेतु स्मार्ट दरवाजो को लगाया गया है। ये सभी दरवाजे नेटवर्किंग के जरिये एक सर्वर से जुड़े रहते है। और इन दरवाजो के खुलने तथा बंद होने की सारी जानकारीयां सर्वर में एकत्रित होती रहती है। यह दरवाजे प्रयोगशाला से सम्बन्धित वैज्ञानिक, शोध छात्र, तकनीकी अधिकारियों और अधिकृत व्यक्तियों द्वारा ही खोले जा सकते है। ये दरवाजे सम्बन्धित व्यक्तियों के हाथो की उंगलियों के निशान / आर एफ डी कार्ड के द्वारा ही खोला जा सकता है। इसके द्वारा प्रयोगशाला में कार्य करने वालो के आने जाने के समय, कार्य करने की अवधि आदि पर नजर रखी जा सकती है। इसके मदद से प्रयोगशाला के खुलने और बंद होने के समय का नियमन किया जा सकता है। प्रथम चरण में ये सुविधा केवल पांच प्रयोगशाला भौगोलिक सूचना प्रणाली, एन एम



सी जी प्रयोगशाला, जीव रसायन प्रयोगशाला, रसायन(यन्त्र) प्रयोगशाला, केंद्रीय प्रयोगशाला और मुख्य भवन) के प्रवेश द्वार पर ही लगाये गये है भविष्य में यह सुविधा अन्य प्रयोगशाला में भी दी जायगी।



Client ID	Admin ID	Time	Terminal	User ID	Name	Emp No.	Branch
0998	00000000 : Master Admin	2019-08-23 12:38:43	0004 : Reception...	00000028	Mr. Subhodeep Da	TEMP28	**** : Not As
0999	00000000 : Master Admin	2019-08-23 12:37:36	0004 : Reception...	00000054	Mr. Souvik Ghos	TEMP54	**** : Not As
0002	00000000 : Master Admin	2019-08-23 12:37:21	0004 : Reception...	00000025	Mr. Archisman Ro	TEMP25	**** : Not As
		2019-08-23 12:34:48	0004 : Reception...	00023538	Mr. Avishek Saha	23538	**** : Not As
		2019-08-23 12:31:57	0004 : Reception...	00000027	Ms. Trupti Rani	TEMP27	**** : Not As
		2019-08-23 12:30:16	0004 : Reception...	00023410	Mr. Debassh Ach	23410	**** : Not As
		2019-08-23 12:29:12	0005 : Chemistry...	00000038	Mr. Pratik Pathak	TEMP38	**** : Not As
		2019-08-23 12:29:08	0004 : Reception...	00000059	Mr. Nitish Kumar	TEMP59	**** : Not As
		2019-08-23 12:28:59	0004 : Reception...	00000106	Shrita Paul	TEMP106	**** : Not As
		2019-08-23 12:28:02	0002 : NMGCG	00000058	Ms. Satabdi Chat	TEMP58	**** : Not As
		2019-08-23 12:27:56	0004 : Reception...	00000105	security 2	TEMP105	**** : Not As
		2019-08-23 12:26:18	0004 : Reception...	00015081	Ms. Pausal Mukh	15081	**** : Not As
		2019-08-23 12:25:57	0004 : Reception...	00015077	Mr. Subir Das	15077	**** : Not As
		2019-08-23 12:25:15	0004 : Reception...	00020072	Dr. Asit Kumar B	20072	**** : Not As
		2019-08-23 12:24:38	0004 : Reception...	00020492	Ms. Thanglam Nr	20492	**** : Not As

(A)Time	Terminal ID	Terminal Name	Partibon	Account
There are no				



## भारतीय सुंदरबन में नहर मात्स्यिकी



भारतीय सुंदरबन नहर प्रणालियों से समृद्ध हैं इन नहरों की खुदाई यह मीठे पानी की पूर्ती के लिए की गई थी। भारतीय सुंदरबन की अधिकांश नहरें ज्वारीय जल को चैनल से जोड़ती हैं। ये नहरें सुंदरबन की आबादी के लिए आजीविका और घरेलू पोषण का स्रोत हैं। भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, ने कैनाल फिशरीज डेवलपमेंट के लिए 2014 से बाली द्वीप में आदिवासी उप परियोजना के तहत एक पहल की थी। वर्ष 2015 में भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने सुंदरबन की आयला से प्रभावित में छह नहरों में भारतीय प्रमुख कार्पस स्टॉक को बहाल करने के लिए भारतीय कार्प के बीज इन नहरों में छोड़े। सुंदरबन के ग्राम पंचायत बाली- I और ग्राम पंचायत कालीतला में कुल 22.1 हेक्टेयर जल क्षेत्र है। इन नहरों की नियमित निगरानी, प्रबंधन और क्षमता निर्माण के साथ अच्छी फसल

प्राप्त की गई और इस कार्यक्रम से 1200 आदिवासी मछुआरों / महिलाओं को लाभ हुआ। सफलता के लिए भाकृअनुप - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने भारतीय सुंदरबन में परियोजना मोड में नहर मत्स्य विकास को लिया है, जिसका उद्देश्य स्थानीय आबादी की आजीविका का समर्थन करने के लिए वैज्ञानिक प्रबंधन प्रथाओं के माध्यम से मछली की वांछनीय मात्रा का उत्पादन करना है। भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने सुंदरबन की भरुआ नहर में सफलतापूर्वक “नेट बैरियर -कल्चर बेस्ड फिशरीज”का प्रदर्शन किया है और छह महीने की संस्कृति अवधि में कुल 200 किलोग्राम मछली 2250 वर्ग मीटर के क्षेत्र से पकड़ी गयी। इस वर्ष की स्टॉकिंग 12 जुलाई 2019 को भरुआ नहर, नामखाना और कोस्टाला नहर, फ्रीजरगंज में भाकृअनुप - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा किया गया, जिसका उद्देश्य सामुदायिक सहभागिता सुनिश्चित करके उन नहरों से बेहतर फसल प्राप्त करना था। श्री भावनामाता माली, जिला शभादीपति, पंचायत नेता, श्री श्रीदाम मंडल, सामाजिक कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। एक किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस मीट 'का आयोजन शिवपुर प्राथमिक विद्यालय में भी किया गया ताकि स्थानीय आबादी के साथ बातचीत की जा सके और सुंदरबन क्षेत्रों में नहर मत्स्य विकास के बारे में उनके विचार प्राप्त किए जा सकें। लोग अपने इलाके में “खालो”/ नहरों में नहर मत्स्य पालन शुरू करने के लिए बहुत प्रेरित और इच्छुक हैं। नहर मत्स्य विकास में आने वाली समस्याओं को प्राथमिकता देने के लिए ग्रामीण भागीदारी मूल्यांकन (PRA)भी आयोजित किया गया था। चूंकि, नहरें आम संपत्ति हैं इसलिए नहर मत्स्य पालन विकास में हितों का टकराव एक बड़ी समस्या है और इनका निवारण तभी संभव हो सकता है जब स्थानीय आबादी, पंचायत राज्य मत्स्य विभाग और भाकृअनुप - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान जैसे अनुसंधान संगठन के बीच अच्छे संबंध और तालमेल हो जिससे संस्थान पूरी तरह से प्रायसरत है।



## भाकृअनुप - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन

संस्थान में 2 से 6 जुलाई, 2019 के दौरान 'इनक्लोजर कल्चर (केज एंड पेन) पर अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन' पर पांच दिवसीय एनएफडीबी प्रायोजित टीओटी (प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण) कार्यक्रम आयोजित किया गया। अंतर्स्थलीय खुले जल में मत्स्य उत्पादन बढ़ाने के लिए केज और पेन जैसी प्रौद्योगिकियों पर ज्ञान और कौशल



विकसित करने के उद्देश्य से टीओटी कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान ने कौशल विकास और तकनीकी हस्तक्षेप के माध्यम से उत्पादन बढ़ाने में, लाइन विभाग और मछुआरा सहकारी समितियों की भूमिका पर जोर दिया। डॉ. एम.ए.हसन, समन्वयक, ने सभा का स्वागत किया और एनएफडीबी प्रायोजित टीओटी कार्यक्रमों और इसके उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी। डॉ. यू. के. सरकार, प्रभागध्यक्ष, जलाशय और आद्रभूमि प्रभाग, ने अपने संक्षिप्त संबोधन में प्रशिक्षुओं को भारत के विभिन्न हिस्सों में जलाशयों और आद्रभूमियों में घेरे में मत्स्य पालन को अपनाने के साथ साथ कुछ सफल कहानियों के माध्यम से सबको प्रेरित किया। उद्घाटन सत्र में, संस्थान



के निदेशक डॉ. बि. के.दास ने प्रतिभागियों के साथ बातचीत की और जलाशयों और आद्रभूमि जैसे खुले पानी में घेरे में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों को मजबूत करने के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने जलाशयों से मत्स्य उत्पादन बढ़ाने और मछुआरों की आय दोगुनी करने के लिए जलाशयों

में केज और पेन कल्चर की अप्रयुक्त क्षमता का उपयोग करने के लिए जोर दिया। टीओटी प्रतिभागियों ने पश्चिम बंगाल, ओडिशा, मणिपुर, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश राज्यों का प्रतिनिधित्व किया और इसमें राज्य विभाग के अधिकारी, एका वन सेंटर (AOC) के कर्मचारी, गैर सरकारी संगठनों के सदस्य, उद्यमी, प्रगतिशील किसान और छात्र शामिल थे। सभी प्रतिभागियों ने विचार विमर्श सत्र में भाग लिया और इस



प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद प्रशिक्षण और उनके इरादों और संलग्नक तकनीकों को बढ़ावा देने के इरादे से अपनी अपेक्षाएं व्यक्त कीं।

## अनुसूचित जनजातीय उपयोजना के तहत ओडिशा के फनी प्रभावित सालिया जलाशय में एचडीपीई पेन में मत्स्यपालन प्रदर्शन



संस्थान ने 29 जून 2019 को अनुसूचित जनजातीय मछुआरों की आजीविका सुधार के लिए ओडिशा के फनी प्रभावित सालिया जलाशय में एचडीपीई पेन मत्स्यपालन का प्रदर्शन किया। सालिया जलाशय क्षेत्र चक्रवाती तूफान "फनी" से बुरी तरह प्रभावित हुआ। प्रभावित मछुआरों की आजीविका में सुधार लाने के लिए, संस्थान ने सही आकार की मछलियों का भंडारण करके जलाशय में मछली उत्पादन को बढ़ाने का प्रयास किया। संस्थान ने 180 हेक्टर जलाशय क्षेत्र में संस्थान के प्रौद्योगिकियों को नियुक्त करके वर्तमान उत्पादन को 30 टन से बढ़ाकर 90 टन करने के लिए सालिया जलाशय स्थित और जिले के सहकारी समिति के सदस्यों के साथ विस्तृत चर्चा की। बड़े आकार के मछली के बीज का परिवहन एक चुनौती है। संस्थान द्वारा जलाशय के लिए स्टॉकिंग सामग्री के रूप में विकसित एचडीपीई पेन में मछली के बीज

का इन-सीटू पालन जलाशय से उत्पादन बढ़ाने के लिए सबसे



अच्छा विकल्प है। सलिया जलाशय में 0.1 हेक्टेयर के आकार के दो पेन लगाए गए हैं। इससे पहले, संस्थान ने जलाशय में विविधतापूर्ण केज कल्चर को इस्तेमाल में लाया था। सलिया जलाशय में पेन कल्चर का प्रदर्शन संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के कुशल मार्गदर्शन में किया गया। श्री एस. पी. भोई, उपनिदेशक, मत्स्य विभाग, गंजम, ओडिशा सरकार के साथ अन्य जिला अधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित थे। प्रदर्शन के दौरान पेन में 50000 आईएमसी बीज का स्टॉक किया गया था। कार्यक्रम में 150 से अधिक अनुसूचित जाति के मछुआरों ने भाग लिया।



मछुआरों ने संस्थान के वैज्ञानिक की टीम के साथ पेन कल्चर और जलाशय से उत्पादन बढ़ाने के बारे में बातचीत की। श्री एच.एस. स्वैन और श्री मितेश रामटेके ने प्रदर्शन कार्यक्रम का समन्वय किया।

### मछुआरों के लिए "आद्रभूमि मात्स्यिकी प्रबंधन द्वारा आजीविका में सुधार" पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

अनुसूचित जनजातीय उपयोजना के तहत "आद्रभूमि मात्स्यिकी प्रबंधन द्वारा आजीविका में सुधार" पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक द्वारा चमरदाहा और बेलेंडांगा (उत्तर 24 परगना जिला, पश्चिम बंगाल) के मछुआरों के

लिए 8 जुलाई, 2019 को किया गया। इस जिले में मत्स्य विकास



के लिए क्षमता वाले बहुत सारे आद्रभूमि हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 8 से 11 जुलाई 2019 तक कुल 42 अनुसूचित जाति के मछुआरों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य आद्रभूमि मत्स्य प्रबंधन के प्रति मछुआरों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण में अंतर को कम



करना था। मत्स्य पालको को मत्स्य बीजों के आद्र भूमि में पालन के लिए एचडीपीई पेन की स्थापना, मत्स्य बीज की स्टॉकिंग और रंचिंग के प्रबंधन की रणनीतियों और तकनीकों को आद्रभूमि में मत्स्य उत्पादन को दोगुना करने के लिए वर्णित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में आद्रभूमि मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर सत्र आयोजित किये गए जिसमें जल और मिट्टी रसायन विज्ञान, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, पेन कल्चर और फीड प्रबंधन आदि शामिल थे। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने प्रशिक्षुओं को संबोधित किया और गरीबी और कुपोषण के उन्मूलन के लिए आद्रभूमि मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर, और मछली किसानों के कौशल विकास की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने मत्स्य पालन में उद्यमशीलता के अवसरों के साथ साथ बेहतर विपणन और व्यावसायिक कौशल के साथ सामंजस्य स्थापित करने पर जोर दिया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को सलाह दी कि वे अपने स्थान पर वापस

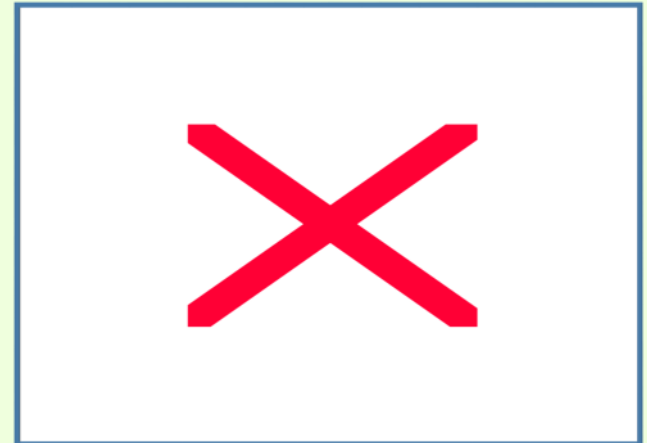
जाने के बाद साथी किसानों को प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान से प्रशिक्षित करें। प्रशिक्षुओं को समूह में काम करने के लिए प्रेरित किया गया और आय वृद्धि के लिए संस्थागत जुड़ाव के महत्व को समझाया गया। प्रशिक्षण मॉड्यूल में व्याख्यान के साथ, समूह गतिविधि, वैज्ञानिकों और मछुयारों



के साथ विचार विमर्श सत्र, और फील्ड एक्सपोजर विज़िट शामिल थे। इस कार्यक्रम का समन्वय संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. पी.के. परिदा और सुश्री सुकन्या सोम द्वारा किया गया था।

### रेंचिंग सह जागरूकता कार्यक्रम का गंगा नदी के नवाबगंज घाट पर आयोजन

संस्थान ने 27 जुलाई, 2019 को नवाबगंज घाट, इच्छापुर, पश्चिम



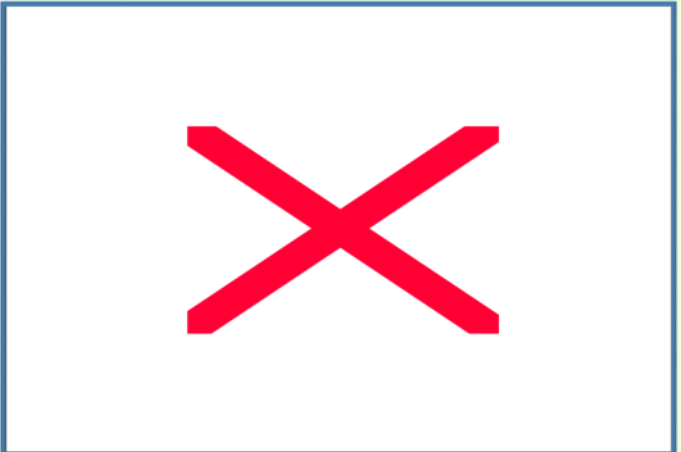
बंगाल में 'उपयुक्त संरक्षण और पुनर्स्थापना योजना विकसित करने के लिए गंगा नदी प्रणाली की मछली और मत्स्य पालन का आकलन' नामक एनएमसीजी परियोजना के तहत एक रेंचिंग सह जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। एनएमसीजी परियोजना के अंतर्गत, संस्थान भारतीय मुख्य कार्प की वृद्धि के लिए नियमित आधार पर देखरेख और निगरानी कार्य कर रहा है, जिसका उद्देश्य 4 राज्यों के 18 अलग-अलग स्थानों में गंगा नदी में रोहू, कतला और मृगल की संख्या में वृद्धि करना है। एनएमसीजी परियोजना के अंतर्गत गंगा नदी में मत्स्य जैव विविधता की वर्तमान स्थिति को समझना और स्थायी मत्स्य पालन से संबंधित मुद्दों की पहचान करना, मत्स्य जैव विविधता के

संरक्षण के लिए रणनीति तैयार करना, भारतीय मुख्य कार्प (आईएमसी) के स्टॉक की बहाली, चयनित बीजों का उत्पादन करना आदि शामिल है। मत्स्य प्रजातियाँ जैसे भारतीय मेजर कार्प (रोहू, कतला, मृगल,



कल्बोस) और महाशीर का रेंचिंग, इत्यादि करना हैं। पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार में मत्स्य स्टॉक की बहाली के साथ-साथ मत्स्य जैव विविधता के संरक्षण के लिए 25 शिविरों का आयोजन किया गया है।

डॉ. चिंदी वासुदेवप्पा, कुलपति, राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता और प्रबंधन संस्थान, हरियाणा, डॉ. सुभाष चन्द्र पाठक, डॉ. उषा मोजा, डॉ. अशोक कुमार साहू, डॉ. वी. आर. चित्रांशी जैसे प्रसिद्ध मत्स्य विशेषज्ञों ने इस अवसर पर आपने विचार रखे। संस्थान के निदेशक और प्रधान अन्वेषक- एनएमसीजी परियोजना डॉ. बि. के.दास, ने खुले जल के



स्थायी मत्स्य पालन, जलीय जैव विविधता के संरक्षण, मत्स्य आवास की बहाली, आदि पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया की मछली पकड़ने से नदियों से मछुआरों की आय बढ़ सकती है और आजीविका में सुधार हो सकता है। डॉ.आर.के. मन्ना, प्रधान वैज्ञानिक ने स्थानीय मछुआरों को बताया कि रोहू, कतला, मृगल और कलबासु न केवल नदी में मछली की आबादी को बढ़ाते हैं, बल्कि नदी में पानी के अशुद्धियों को हटाकर पर्यावरण को भी बनाए रखते हैं। डॉ. ए. के.साहू ने भी नदी के वातावरण में मछलियों को कम से कम 3-4 दिनों के लिए किसी भी प्रकार के विनाशकारी मछली पकड़ने वाले कार्यों का उपयोग नहीं करने की अपील की, ताकि रिहा हुए मछलियों को नदी के वातावरण से एकात्मक होने दिया जा सके। इस रेंचिंग कार्यक्रम में, गंगा नदी में

लगभग 60 हजार मत्स्य बीज छोड़े गए । स्थानीय मछुआरों ने मछली

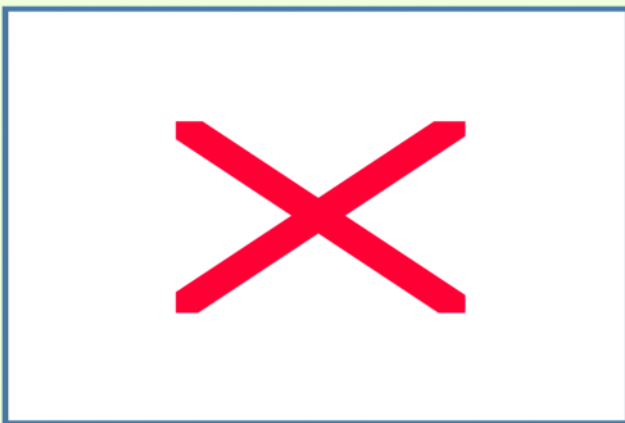


पकड़ने के लिए जहर का उपयोग, अवैज्ञानिक मछली पकड़ने के साधनों का उपयोग, जल प्रदूषण आदि जैसे विभिन्न गंभीर मुद्दों पर प्रकाश डाला और मत्स्य पालन में सुधार के लिए आवश्यक प्रशासनिक हस्तक्षेप के लिए अनुरोध किया । कार्यक्रम स्थानीय मीडिया द्वारा प्रचारित किया गया ।



**‘स्थायी मात्स्यिकी के लिए बाढ़कृत आद्रक्षेत्रों के प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम’ का आयोजन**

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में 23-27 जुलाई, 2019 के दौरान

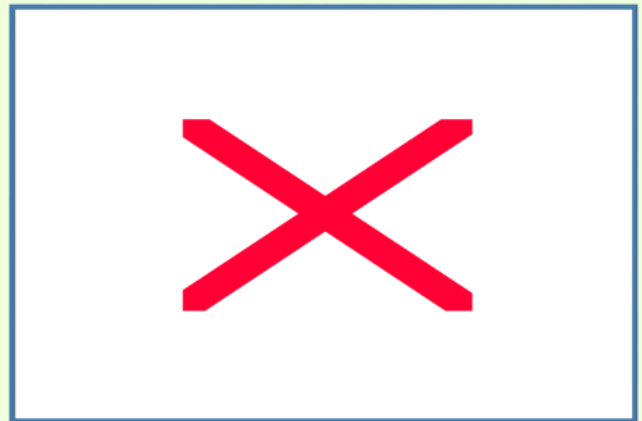


एनएफडीबी प्रायोजित ‘स्थायी मात्स्यिकी के लिए बाढ़कृत आद्रक्षेत्रों प्रबंधन’ विषय पर प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने का कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

डॉ. पी. दास, वैज्ञानिक और टीओटी संयोजक ने उद्घाटन कार्यक्रम में गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया । केंद्र प्रमुख डॉ. बी. के. भट्टाचार्य ने प्रतिभागियों से इस विषय पर अधिक से अधिक

ज्ञान प्राप्त करने का आग्रह किया ताकि वे साथी मछुआरों / किसानों को बील मत्स्य प्रबंधन पर शिक्षा देने के लिए सामर्थ हों । एएफडीसी लिमिटेड, गुवाहाटी के परियोजना निदेशक श्री पी. के. हजारिका ने बताया कि असम के बील मत्स्य विकास और प्रबंधन में एएफडीसी लिमिटेड निवेश करेगा । एएफडीसी लिमिटेड के प्रबंध निदेशक, श्री एन.सी. बसुमतरी ने कहा कि असम की बील में मत्स्य पालन वृद्धि की बहुत अधिक संभावना है । कार्यक्रम का उद्घाटन, डॉ. दिलीप कुमार, पूर्व उपकुलपति, आईसीएआर-सीआईएफई, मुंबई और प्रमुख, राष्ट्रीय अंतर्देशीय मत्स्य और एक्वाकल्चर नीति के लिए तकनीकी समिति, भारत सरकार, ने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण कार्यक्रम के समय का उपयोग करने और अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने का आग्रह किया । उन्होंने जोर देकर कहा कि बील मत्स्य संसाधन न केवल मत्स्य पालन के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि कई पारिस्थितिक तंत्र के लिए भी महत्वपूर्ण हैं ।

प्रशिक्षणार्थियों को एक दिवसीय प्रक्षेत्र प्रदर्शन के लिए मोरीगांव जिले में 47-मोराकोलॉग और थेकेरा बील का दौरा कराया गया एवं बील मत्स्य पालन में घेरे में मछली पालन और मत्स्य बीज उत्पादन बढ़ाने की तकनीक का व्यावहारिक प्रदर्शन किया गया ।



समापन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. एच. सी. भट्टाचार्य, पूर्व निदेशक (विस्तार), सम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट थे । डॉ. भट्टाचार्य ने प्रतिभागियों से मछली उत्पादन में सतत वृद्धि के लिए अपने संबंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्राप्त ज्ञान को लागू करने का आग्रह किया । टीओटी के वैज्ञानिक और सह-संयोजक श्री ए. के. यादव ने प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रायोजित करने के लिए केंद्र के सभी प्रतिभागियों, संसाधन व्यक्तियों, कर्मचारियों, और एनएफडीबी, हैदराबाद को उनकी संपूर्ण भागीदारी के लिए धन्यवाद दिया ।

कार्यक्रम में असम, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, मणिपुर और मेघालय के मत्स्य अधिकारियों, बील विकास और प्रबंधन समिति के सदस्यों, शिक्षाविदों और उद्यमियों सहित कुल 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

### **संस्थान की पंचवर्षीय समीक्षा बैठक**

संस्थान की पंचवर्षीय समीक्षा बैठक दिनांक 26 से 27 जुलाई को डॉ. चिंदी वासुदेवप्पा, कुलपति, राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता

और प्रबंधन संस्थान, हरियाणा, के अध्यक्षता में हुई। इस समिति के



अन्य सदस्य डॉ. सुभाष चन्द्र पाठक, डॉ. उषा मोजा, डॉ. अशोक कुमार साहू, डॉ. वी. आर. चित्रांशी जैसे प्रसिद्ध मत्स्य विशेषज्ञों थे एवं डॉ. विजय कुमार बेहरा उस समिति के सदस्य सचिव थे इस अवसर इस की ड्राफ्ट संस्तुति के समीक्षा समिति के अध्यक्ष तथा सदस्यों द्वारा की गयी

### महत्वपूर्ण बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने 25 जून, 2019 को भाकृअनुप, नई दिल्ली में माननीय मंत्री, मात्स्यिकी, पशुपालन और डेयरी, श्री गिरिराज



सिंह के साथ बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के वैज्ञानिक ने दिनांक 05 जुलाई, 2019 को कृषि विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार, के साथ नवान्न, कोलकाता में कृषि विभाग के सचिव, पश्चिम बंगाल सरकार और निदेशक, केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (CRIDA), हैदराबाद में कृषि क्षेत्र में आकस्मिक परिस्थितियों से निबटने हेतु की जाने वाली तैयारियों को बढ़ाने पर आयोजित बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 16 जुलाई, 2019 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में आयोजित परिषद की स्थापना दिवस समारोह और पुरस्कार वितरण समारोह में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने 17 जुलाई, 2019 को नई दिल्ली में मत्स्य और पशु विज्ञान अनुसंधान संस्थानों के निदेशकों के साथ संभागीय बैठक में भाग लिया।

### अन्य कार्यकलाप

संस्थान में दिनांक 28 जून से 2 जुलाई, 2019 को “अंतर्स्थलीय खुलाजल मात्स्यिकी प्रबंधन एवं विकास” विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 31 मछुआरो ने भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 29 जून, 2019 को भाकृअनुप-केंद्रीय खारा जलजीव पालन संस्थान, चेन्नई में मत्स्य स्वास्थ्य पर अखिल भारतीय नेटवर्क कार्यक्रम की बैठक में भाग लिया।

संस्थान के वडोदरा केंद्र ने स्वच्छ भारत कार्यक्रम के तहत 25 जुलाई, 2019 को सफाई कार्यक्रम का आयोजन किया।

संस्थान में दिनांक 8-11 जुलाई 2019 को “आजीविका उन्नयन हेतु आर्द्रक्षेत्र मात्स्यिकी प्रबंधन” विषय पर 21 मछुवारों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

### आगामी कार्यक्रम

अगले माह संस्थान हिन्दी में एक दिवसीय कार्यशाला जिसका विषय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी : संरक्षण, संवर्धन और जीविकोपार्जन, का आयोजन 13 सितम्बर 2019 को कर रहा है।

### सम्पादक मंडल की तरफ से

इस अंक की प्रस्तुति के साथ ही हमारा इस माह का एक ओर लक्ष्य पूर्ण हो गया है। इस माह संस्थान के पूर्व महान वैज्ञानिक प्रो. हीरालाल चौधरी द्वारा अविष्कृत प्रेरित प्रजनन तकनीक की महान उपलब्धि पर मनाये जाने वाले मत्स्य कृषक दिवस पर सम्मानित मत्स्य पलको को बहुत-बहुत बधाई।

### प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मोर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कासिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई-मेल : [director.cifri@icar.gov.in](mailto:director.cifri@icar.gov.in); वेबसाइट : [www.cifri.res.in](http://www.cifri.res.in)

ISSN0970-616X

सिफरी मासिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः उत्पन्न नहीं की जा सकती है